3

— + — = —

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 3 के अंक   कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSE

उत्तर क्र. 1

(i) 'संकेत' -

स राजा - - - - - - - - - - योजयिष्यामि।

'शब्दार्थ' -

तदाकर्ण्य = ऐसा सुनकर, आहूय = बुलाकर, शास्त्रविमुखाः = शास्त्रों से विमुख, विवेकरहिताश्च = और विवेकरहित, नीतिशास्त्रोपदेशेन = नीतिशास्त्र के उपदेश से, द्राक् = शीघ्र, समृद्धया = सम्पन्न।

'अनुवाद' -

ऐसा सुनकर उस (वह) राजा ने विष्णुशर्मा को बुलाकर कहा- "हे भगवन्! मेरे ये पुत्र शास्त्रों से विमुख (अनपढ़) और विवेक रहित हैं। अत: नीतिशास्त्र के उपदेश से जिस प्रकार ये शीघ्र ज्ञानवान बन जायें वैसा कीजिए। मैं तुम्हें अधिक मात्रा में धन-सम्पत्ति से सम्पन्न कर दूँगा।"

—

पृष्ठ के अंकों का योग

(iii) 'संकेत' -

अत्रान्तरे - - - - - - - - . समाद्दिशत

'शब्दार्थ' -

अत्रान्तरे = इसी बीच, भगवान् चतुर्मुखस्तत्र = ब्रह्मा, द्रष्टुं = देखने, स्वयमुपागमत् = स्वयं आये सहसोत्थाय = अचानक उठकर, प्राञ्जलिस्तस्थौ = हाथ जोड़कर खड़े हो गए, सम्पूज्य = पूजा करके, भगवान् पद्मयोनि = भगवान् ब्रह्मा, समुपविश्य = बैठकर।

'अनुवाद' -

इसी बीच मुनि को देखने स्वयं भगवान् ब्रह्मा आये। उन्हे देखकर आश्चर्यचकित होकर वाल्मीकि मुनि अचानक उठकर हाथ जोड़कर खड़े हो गए। इसके बाद मुनि ने ब्रह्मा जी के पैर धोकर, पाद्यार्घ्य पाद्याञ्जलि वंदना करके उन्हे दिव्य आसन पर बिठाया। इसके बाद भगवान ब्रह्मा ने स्वयं

B S E

बैठकर वाल्मीकि मुनि को भी आसन ग्रहण करने के लिए कहा। (आसन ग्रहण करने के लिए दिखाया।)

5

उत्तर क्र. 2

(ii) 'संकेत' -

वागर्थाविव . . . . . . पार्वतीपरमेश्वरौ।

'शब्दार्थ' -

वागर्थाविव = शब्द और अर्थ की भाँति, संपृक्तौ = जुड़े हुए, वागर्थप्रतिपत्तये = शब्द और अर्थ की उत्पत्ति के लिए, पितरौ = माता और पिता, वन्दे = वंदना करता हूँ।

'अनुवाद' -

शब्द और अर्थ की उत्पत्ति के लिए भाँति जुड़े हुए शब्द और अर्थ की उत्पत्ति के लिए संसार के माता और पिता पार्वती-शंकर की मैं वंदना करता हूँ।

7

पृष्ठ के अंकों का योग

2

'विशेष' -

भगवान् शिव और पार्वती जी की उपरोक्त श्लोक में वंदना की गई है।

(iii)

'संकेत' –

नीहार परुषोलोकः ... हव्यवाहनः

'शब्दार्थ' –

नीहार = ओस से ठण्ड के कारण परुषोलोकः = जीव कठोर हो गए हैं, पृथिवी = धरती (भूमि) सस्यशालिनी = अन्न (अनाज) से परिपूर्ण, जलान्यनुपभोग्यानि जल उपयोग के योग्य नहीं है सुभगो = सुखदायी, हव्यवाहन अग्नि।

'अनुवाद' –

कालिदास जी हेमन्त ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि इस ऋतु में ओस से ठंड के कारण सभी जीव कठोर हो गए हैं। पृथ्वी अनाज से परिपूर्ण (हरी-भरी) हो गई है। जल ठण्डा होने के कारण उपभोग

B
S
E

—

पृष्ठ के अंकों का योग

7 | 7 + 12 = 85

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक

12

के योग्य योग्य नहीं रहा है। अग्नि इस ऋतु मे सुखदायी है।

'विशेष'-

कवि द्वारा हेमन्त ऋतु के वर्णन मे जल को उपभोग्य के योग्य नहीं और अग्नि को सुखदायी बताया गया है।

उत्तर-3 'प्रश्नों के उत्तर'-

(i) धन की तीन गतियाँ होती है- दान, भोग और नाश। धन का न हि भोग और न हि दान करने पर धन की तीसरी गति होती है अर्थात धन नष्ट हो जाता है।

(iii)

प्रजा को शिक्षित करने, रक्षा करने एवं भोजन भरण-पोषण की उचित व्यवस्था करने के कारण राजा दिलीप प्रजा के पिता कहलाये। अन्य तो केवल जन्म देने के कारण पिता कहलाये कहलाये।

12

पृष्ठ के अंकों का योग

9½	+	5	=	13½
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 8 के अंक		कुल अंक

(iv) ऊँचे - ऊँचे बादलों को न तो किसी से प्रेम है, न किसी से शत्रुता है, न हि किसी से कुछ पाने की इच्छा रखते हैं, फिर भी बादल वर्षा करके पृथ्वी का ताप हरते है अर्थात परोपकार ही करते हैं। लोगों को कष्टों से मुक्ति देते हैं।

BSE

(v) नचिकेता उद्दालक का पुत्र था।

(vi) हेमन्त ऋतु के दिन ओस के कणों से ढँके हुए, छोटे, सूर्य का कम प्रकाश प्राप्त करने वाले कोहरे से युक्त और शीतल वायु वाले होते हैं।

5

'उत्तर-4' नीति श्लोक :-

5

पृष्ठ के अंकों का योग

(A) कुलीनैः सह सम्पर्कं, पण्डितैः सह मित्रताम् ज्ञातिभिश्च समं मेलं कुर्वाणो नरो न विनश्यति

(ii) नारिकेल - समाकारा दृश्यन्ते खलु सज्जनाः।
अन्ये बदरिकाकाराः बहिरेव मनोहराः॥

4

उत्तर-5

संधि	संधि विच्छेद	संधि का नाम
(i) सज्जनः	सत् + जनः	व्यञ्जन संधि
(iii) तल्लीनः	तत् + लीनः	व्यञ्जन संधि
(iv) मतिरेव	मतिः + एव	विसर्ग संधि

3

उत्तर-6

	संधि	संधि का नाम
(i) वाक् + ईशः	वागीशः	व्यञ्जन संधि
(iii) सः + अपि	सोऽपि	विसर्ग संधि

2

9

पृष्ठ के अंकों का योग

BSE

(10) 221 + 6 = 281

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 10 के अंक | कुल अंक

उत्तर - 7

	सामासिक पद	समास विग्रह	समास का नाम
(ii)	~~पंचवटी~~	~~पञ्चानां वटानाम् समाहार:~~	
(i)	दीनदानम्	दीनाय दानम्	चतुर्थी तत्पुरुष
(iii)	घनश्यामः	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास
(iv)	पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुब्रीहि समास

3

B
S
E

उत्तर - 8 शब्द रूप :—

	शब्द	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(ii)	फल	पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
(iii)	धेनु	प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
(iv)	गुरु	तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः

3

6

पृष्ठ के अंकों का योग

'उत्तर-9'

	धातु	पुरुष	लकार	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(i)	गम्	उत्तम	लृट्	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:
(ii)	स्पृश्	अन्य	लोट्	स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
(iii)	पृच्छ्	अन्य	विधिलिङ्	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु:

3

BSE

'उत्तर-10'

	धातुरूप	धातु	लकार
(i)	स्पृशानि	स्पृश्	लोट् लकार
(ii)	गमिष्यति	गम्	लृट् लकार

2

'उत्तर-11'

		धातु	प्रत्यय
(i)	गच्छन्	गम्	शतृ
(ii)	सेवमान:	सेव्	शानच्
(iii)	पठितवान्	पठ्	क्तवतु

2

7
पृष्ठ के अंकों का योग

(12) 36½ + 4 = 39½

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 12 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

'12' उत्तर

वाक्य प्रयोग :-

(i) तत्र (वहाँ) :-

तत्र रामः अस्ति।

(ii) अद्य (आज) :-

अद्य सोमवासरः अस्ति।

2

उत्तर-13

शुद्ध वाक्य :-

(ii) वृक्षात् पत्रं पतति।

(i) सः गच्छति।

2

उत्तर-14

(i) इदम् मम पुस्तकम् अस्ति।

(ii) विद्या विनयं ददाति।

4

पृष्ठ के अंकों का योग

(iii) भारतः अस्माकं देशः अस्ति।

(13) 31½ + 5 = 44½

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

(iv) सः गृहं गच्छति।

(vi) श्री गणेशाय नमः।

5

उत्तर-15

"निबंध"

(iii)

"सदाचार:"

(1) सताम् आचार: 'सदाचार:' उच्यते।

(2) सज्जना: विद्वांश्च यथा आचरन्ति तथैव आचरणं सदाचार: भवति।

(3) सज्जना सर्वै: सह शिष्ट शिष्टतापूर्वकं व्यवहारं कुर्वन्ति।

(4) मातु: पितु: गुरुजनानां, वृद्धानां ज्येष्ठानां च आदरं कुर्वन्ति।

(5) तेषाम् आज्ञां पालयन्ति।

(6) ते सत्य कर्मणि प्रवृत्ता भवन्ति, असत्य-कर्मभ्यश्च निवृत्ता भवन्ति।

(7) सदाचारेण एव संसारे जना: उन्नतिं कुर्वन्ति।

B S E

5

पृष्ठ के अंकों का योग

(14) 4945 + 5 = 495

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

(8) सदाचारिणः बुद्धिः निर्मला भवति।

(9) समाजस्य राष्ट्रस्य च उन्नत्यै सदाचारस्य महती आवश्यकता भवति।

(10) अतः जीवने सदाचारस्यैव महत्वं सर्वत्र दृश्यते।

(11) सदाचारिणः जनाः सरलं मृदु विनीतो च भवन्ति।

(12) सदाचारः मानवस्य एकं वैशिष्टं अस्ति

—x—x—x—x—

50

495

B S E

5

पृष्ठ के अंकों का योग